Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

नवादा जिला में मानव संसाधन एवं साक्षरता का विकास : एक भौगोलिक अद्ययन

डा० कुश कुमार
एम०एस०सी०, पी०एच०डी०, एम०एड०,
सर जी०डी० पाटलीपुत्र उच्च माध्मिक विधालय,कदम कुआँ, पटना-03

शोध आलेख सार– साक्षरता का सामाजिक आर्थिक महत्व अत्यधिक है विभिन्न देशों में इसे अलग- अलग ढंग से परिभाषित किया गया है| भारत में साक्षरता का अर्थ अपने दैनिक जीवन में साधारण कथन को समझ के साथ उसको लिखने तथा पढ़ने की योग्यता रखने से है | मानव सभी विकास तंत्र के केंद्र में होता है | वह अपनी शिक्षा विज्ञान और तकनीक का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संस्कृति का निर्माण करता है | किसी भाषा में एक साधारण संदेश को समझ कर, पढ़ एवं लिखने सकने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति को साक्षर कहा जाता है | साक्षरता को अनेक सामाजिक तथा आर्थिक पक्ष प्रभावित करते हैं | नवादा जिला की उत्पत्ति पुराने गया जिला से निकालकर 2 अक्टूबर 1972 को हुई | यह जिला पहले पुराने गया जिला का एक अनुमंडल था | इस जिला का क्षेत्रफल 2,494 वर्ग किलोमीटर है | इस जिला के प्रखंडों में साक्षरता दर वितरण की असमानता आर्थिक विकास में विभिन्नता के कारण है | शिक्षा में लैंगिक विभिन्नता के साथ ग्रामीण नगरीय अंतर भी पाया जाता है | जिले में पुरुष स्त्री तथा ग्रामीण नगरों की साक्षरता दर में स्पस्त: असमानता पाई जाती है | केंद्रीय तथा राज्य सरकारों के प्रयत्न से जिला में साक्षरता दर लगातार बढ़ी है | पिछले वर्षों में साक्षरता दर में तीव्र गति से वृद्धि हुई है और भविष्य में यह वृद्धि दर तीव्रतर होने की संभावना है |

मुख्य शब्द – मानव संसाधन, साक्षरता, पुरुष स्त्री साक्षरता दर, साक्षरता विकास |

परिचय

साक्षरता की परिभाषा :- भारत में 1951 की जनगणना के अनुसार साक्षर व्यक्ति का तात्पर्य चार वर्ष के ऊपर आयु वाले ऐसे व्यक्ति से है, जो कम से कम साधारण पत्र (Iatter) पढ़ लिख सके| वर्तमान समय में भारत में देश की किसी एक भाषा में साधारण संवाद को समझ लेने, पढ़ लेने और लिख लेने को साक्षर माना जाता है | जी० टी० ट्रीवार्था (G.T.Trewartha) के अनुसार अपने देश की भाषा में अपने नाम को

लिख लेने और पढ़ लेने को साक्षर करते हैं | संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार साक्षरता का तात्पर्य अपने दैनिक जीवन में साधारण कथन को समझ लेने के साथ-साथ उसको लिख लेने और पढ़ लेने की योग्यता रखने से है | (U.N.O. defines literacy as the ability of a person to read and write with understanding a short simpie statement of his every day life)

मानव के गुणात्मक पहलू को सुदृढ़ बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है | शिक्षा सामाजिक समस्याओं को समझने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है | यह हमारी योग्यता बढ़ाने एवं विभिन्न समस्याओं के निदान के उपाय का विकास करती है | यह कृषि या उधोग धंधों में लगे व्यक्तियों की कार्य कुशलता में वृद्धि कर अधिक उत्पादन के लिए प्रेरित करती हैं | वस्तुतः आत्म नवीनीकरण की दिशा में भावी आर्थिक जीवन की कल्पनाओ को साकार करने में शिक्षा की उपयोगिता निर्विवाद है, क्योंकि शिक्षा विकास की आत्मा के रूप में आर्थिक और सामाजिक उन्नति का मूलाधार तथा वास्तविक मापदंड है | साक्षरता जनसंख्या का सामाजिक पक्ष होते हुए एक ऐसा गुणात्मक तथ्य है, जो क्षेत्रीय आधार पर परिवर्तनशील सामाजिक- आर्थिक प्रवृत्तियों की ओर संकेत करता है | भारत में किसी भाषा में एक सरल सूचना को पढ़ लिखकर समझ पाने वाले व्यक्तियों को साक्षर के अंतर्गत रखा जाता है | बहुधा एक साक्षर व्यक्ति सीमित परिवेश से बाहर निकल कर सामाजिक और आर्थिक विकास संबंधी प्रवृत्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेता है चाहे वह कृषि क्षेत्र हो या उद्योग क्षेत्र हो | साक्षरता किसी भी क्षेत्र की आर्थिक- सामाजिक तथा राजनैतिक विकास की कुंजी है | (Literacy is considered as a fairly reliable indenx of socio&cultural economic and political advancement)

सामान्यतः यह विविध व्यवसायों एवं श्रमिकों में गत्यात्मकता के लिए वैकल्पिक आधार प्रदान करती है | इसका प्रत्यक्ष संबंध मानव के विचार एवं विवेकपूर्ण निर्णय की क्षमता से है, जिसका प्रभाव सामाजिक- आर्थिक प्रतिरूपों पर पड़ता हैं |

मानव संसाधन (साक्षरता)

मानव सभी विकास तंत्र के केंद्र में होता है | मानव संसाधन सभी संसाधनों में सब से महत्यपूर्ण है | मानव का ज्ञान ही सब से बार संसाधन है | शिक्षा मनाब की चौथी मूलभूत आवश्यकता हैं | मानव अपने ज्ञान के बल पर ही किसी चीज को संसाधन में बदलता है | जिस राष्ट्र य राज्य का मानव संसाधन जितना विकसित होता है वह राष्ट्र या राज्य उतना ही विकसित एवं प्रगतिशील होता है | साक्षरता किसी देश की सामाजिक आर्थिक विकास का सूचक है | इससे किसी समाज की आधुनिकीकरण की मात्रा का पता चलता है | साक्षरता से विवाह, जन्म दर, मृत्यु दर इत्यादि प्रभावित होते हैं | साक्षरता के अनुसार ही जनस्थानांतरण होता है | साक्षरता से विवाह के समय स्त्री की आयु प्रभावित होती है | इसी के आधार पर विकास की योजनाएं और शिक्षा नीति निर्धारित की जाती है | साक्षरता गरीबी दूर करने में सहायक होती है | प्रजातांत्रिक ढांचे को बनाए रखने के लिए साक्षरता आवश्यक है क्योंकि, इससे स्वतंत्र मानवाधिकार का प्रयोग संभव है |

शिक्षा ही एक सबसे बड़ा तत्व है, जिसके द्वारा आर्थिक विकास कला व विज्ञान संबंधित विकास की प्रगति हो सकती है | बिहार के विभाजन होने के बाद यहां के अधिकांश प्राकृतिक संसाधन खनिज वन इत्यादि नए झारखंड राज्य में चला गया | इस दृष्टिकोण से आज का बिहार बहुत निर्धन हो गया है | परंतु यहां मानव संसाधन की कमी नहीं है | शिक्षा का प्रचार प्रसार कर बंटवारे के बाद के संसाधन की कमी को मानव संसाधन का विकास कर क्षतिपूर्ति किया जा सकता है | वास्तव में मानव संसाधन ही किसी राज्य एवं प्रदेश का सही संसाधन होता है |

नवादा जिला : नवादा जिला की उत्पत्ति पुराने गया से निकालकर 2 , अक्टूबर 1972 को हुई है | नवादा जिला पहले पुराने गया जिला (वर्तमान में मगध प्रमंडल) का एक सब-डिवीजन था | इसके अंतर्गत चार सहर नवादा, वारसलीगंज, हिसुआ,और रजौली, आते हैं |

नवादा जिला का क्षेत्रफल 2,494 वर्ग किलोमीटर है तथा इसका विस्तार 24 डिग्री 31 मिनट 45 सेकंड से 25 डिग्री 6 ' 45 " उत्तरी अक्षांशों तक तथा 85 डिग्री 17' 20 " से 86 डिग्री 3' 30 " पूर्वी देशांतर के बीच है | इसकी धरातल एक समान नहीं है | उत्तरी भाग लगभग समतल तथा बहुत ही उपजाऊ है | पर दक्षिणी भाग उबड़ –खाबड़ तथा पहाड़ियों और जंगलों की अधिकता के कारण कम क्षेत्र ही कृषि के लिए उपलब्ध है | जिला का दक्षिणी उच्च भूमि दक्षिनी –पश्चिमी भाग में स्थित सिरदला से दक्षिणी-पूर्वी भाग में स्थित कौआकोल तक विस्तृत है | इस उच्च प्रदेश के अंतर्गत रजौली का बड़ा भाग तथा कुछ हिस्सा गोविंदपुर तथा अकबरपुर का भी आता है | उत्तरी भाग उपजाऊ काँप मिट्टी द्वारा निर्मित है जिस पर अनेक नदियां जैसे सकरी, धनरजी, ,तिलैया, खूरी , घाघर, प्रवाहित होती है | फसलों के उत्पादन के लिए यहाँ की जलवायु अनुकूल है |

जिले की कुल आबादी -2011 की जनगणना के अनुसार 22,19,146 है ,जिसमें पुरुष जनसंख्या 11,44,668 तथा महिला जनसंख्या 10,7 4,478 है | नवादा जिला दो अनुमंडलो तथा 14 प्रखंडों में विभक्त है | नवादा एवं रजौली 2 अनुमंडल है | जिला मुख्यालय नवादा हैं | जिला में परिवहन के साधनों में विशेषकर सड़क मार्ग का अच्छा विकास हुआ है |

साक्षरता को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्व

साक्षरता की वृद्धि और प्रसार क्षेत्र में संपूर्ण सामाजिक आर्थिक अंतर्प्रक्रिया का परिणाम है जिसमें निम्न मुख्य है :-

1. अर्थव्यवस्था का प्रकार (type of economy)
2. नगरीकरण का स्तर(degree of urbanization)
3. जीवन- स्तर (standard of living)
4. जातीय संरचना(ethnographic set-up)
5. मानव समाज में स्त्रियों की स्थिति(status of woman in the society)

6. मूल्य- प्रणाली(value system)
7. शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता (availability of educational facilities)
8. यातायात और संचार साधनों का विकास(development of the means of communication and transport)
9. तकनीकी विकास का स्तर(level of techonological advancement)
10. सार्वजनिक नीति(public policies).

साक्षरता में विषमता का स्वरूप (Pattern of literacy differentials):

विश्व के विभिन्न देश / राज्य / जिलों में साक्षरता की मात्रा दर में सार्थक अंतर देखने को मिलता है | एक वृहद वर्ग के अंदर विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों या समुदायों के शिक्षा तथा साक्षरता में अंतर पाया जाता है |(पंडा 19 88,147) | ये अंतर प्रमुख रूप से चार प्रकार के होते हैं

1 . ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में(In Rural and Arban areas)
2. पुरुष व स्त्री में(In Males and Females)
3 .विभिन्न सामाजिक / धार्मिक समुदायों में(In Different Social/Religious Communities)
4 . विभिन्न व्यावसायिक समूहों में (In different Trade Commenities)

साक्षरता दर(Literacy Rate)

निम्न तालिका में राज्य जिला सीडी ब्लाक के साक्षरता दर को दिखाया गया है

		जनगणना 2001			जनगणना 2011		
क्र०संख्या	राज्य /जिला	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
	बिहार राज्य	47.53	60.32	33.57	63.82	73.39	53.33
	नवादा जिला	47.36	61.22	32.64	59.76	69.98	48.86
1.	नवादा सदर	57.53	69.27	44.25	61.63	71.40	51.09
2.	नारदीगंज	43.91	58.13	28.69	55.13	54.31	35.42
3.	वारसलीगंज	49.50	62.52	35.47	60.87	58.63	41.37
4.	काशीचक	51.33	64.56	36,71	63.61	60.13	44.19
5.	पकरीबरावा	43.56	56.80	29.38	54.12	52.37	35.30
6.	कौआकोल	37.57	51.57	22.52	47.12	46.93	29.19
7.	रोह	42.61	56.16	28.21	59.02	57.32	39.11
8.	गोबिंदपुर	46.78	62.91	30.62	69.91	69.08	54.20
9.	अकबरपुर	46.22	59.78	31.96	60.92	58.25	41.72
10.	हिसुआ	48.58	62.29	34.19	63.18	60.09	43.16
11.	नरहट	53.12	68.55	37.58	62.56	60.78	41.62
12.	मेसकौर	45.44	60.98	29.22	59.28	58.53	38.36

13.	सिरदला	44.34	60.60	27.48	59.70	58.53	38.54
14.	रजौली	45.86	59.79	30.80	58.99	57.40	39.51

स्रोत(source) भारत की जनगणना 2001,भारत की जनगणना 2011

ऊपर के तालिका से स्पष्ट है कि नवादा जिला की कुल साक्षरता दर बिहार राज्य की औसत साक्षरता दर की तुलना में थोड़ा ही कम है | साक्षरता दर आर्थिक स्थिति से बहुत कुछ प्रभाबित होती है | यह आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा जिला है | जिला के अंतर्गत प्रखंडों में धरातलीय एवं आर्थिक विषमताओं के कारण साक्षरता दर में अंतर पाया जाता है |

नवादा जिला में साक्षरता वितरण प्रारूप को तीन वर्गों में वांटा जा सकता है

1. कम साक्षरता दर वाले प्रखंड क्षेत्र (50 % से कम):- अध्ययन क्षेत्र में कौआकोल प्रखंड में 50 % से कम साक्षरता दर अंकित है | इस प्रखंड का साक्षरता दर 47.12 % है | इस के अंतर्गत सिर्फ 01 प्रखंड आता है |

2.मध्य साक्षरता दर वाले प्रखंड क्षेत्र (50 से 60% तक) इसके अंतर्गत नारदीगंज ,पकरीबरावा ,रोह ,मेसकौर ,सिरडाला और रजौली प्रखंड आते है | इस प्रकार इसके अंतर्गत 06 प्रखंड आते है |

3. अधिक साक्षरता दर वाले प्रखंड क्षेत्र (60 % से ऊपर) इस अध्यनन क्षेत्र में 60% से अधिक साक्षरता दर वाले प्रखंडों में नवादा सदर, वारसलीगंज, काशीचक, गोविंदपुर, अकबरपुर, हिसुआ ,नरहट प्रखंड शामिल है | इस प्रकार इसके अंतर्गत कुल 07 प्रखंड आते हैं |

पुरुष- स्त्री साक्षरता दर का अंतर

स्त्रियों में पुरुषों की तुलना में साक्षरता दर कम है , जिसके निम्नलिखित कारण है :-

1.अधिकांश जनसंख्या गरीबी के कारण स्त्री शिक्षा की तुलना में पुरुष शिक्षा को प्राथमिकता देती है |

2. हमारे समाज में स्त्रियों को गृह पक्षी(Home Bird) माना जाता है और उन्हें चाहरदीवारी के भीतर बंद रखा जाता है |

3. हमारे यहां स्त्रियों का दर्जा निम्न है |

4. हमारे राज्य / जिला में बालिका विद्यालयों और अध्यापिकाओ की कमी पाई जाती है |

5. कम उम्र शादी हो जाने के कारण बालिकाओं को स्कूल जाने का अवसर नहीं मिल पाता है |

6. स्त्रियों की गतिशीलता पर प्रतिबंध होने के कारण गांव में विद्यालय होने पर भी वे पढ़ने के लिए नहीं जा पाती हैं |

7. फिर ऐसे क्षेत्रो में स्त्री अपने पति की संपत्ति मानी जाती है ,जिस कारण माता-पिता उसकी शिक्षा पर खर्च करना नहीं चाहते |

लेकिन वर्तमान समय में सभी वर्गों में स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है | प्रत्येक पंचायत में एक उच्च माध्यमिक (+2) विद्यालय की स्थापना की जा रही है | बालिकाओं की शिक्षा पर सरकार विशेष रूप

से बल दे रही हैं जिसके सुखद परिणाम होने की संभावना है | लड़कियों की विवाह की उम्र सीमा 18 वर्ष निर्धारित की गई है | शादी के समय शिक्षित लड़की की मांग बढ़ते जाने के कारण उसके माता-पिता द्वारा भी उन्हें शिक्षित किया जा रहा है | (ओझा , 235 -36)

बिहार सरकार ने बालिकाओं की शिक्षा प्रसार के लिए अनेक सुविधाएं प्रदान कर रही हैं | इसके अंतर्गत साईकिल तथा पोषक योजना शुरू किया गया है | छात्रवृत्तियो में वृद्धि एवं उच्चतम अंक पाने बालों को पुरस्कृत करने की योजना बनाई गई है | नौकरी तथा व्यवसाय में स्त्रियों को समान अवसर प्राप्त होने का प्रभाव भी साक्षरता के विकास में सहायक हो रहा है | ग्रामीण लोगों में भी सामाजिक ,आर्थिक व राजनीतिक चेतना जागृत होती जा रही है | सामाजिक परिवर्तन शिक्षा का अधिकार है |

जिला में साक्षरता दर विकास की प्रवृत्ति

नवादा जिला में साक्षरता दर की प्रवृत्ति (1981-2011)

	साक्षारता की दर प्रतिशत में		
वर्ष	कुल	पुरुष	स्त्री
1981	26.50	40.20	12.70
1991	38.96	54.85	21.82
2001	47.38	61.22	32.64
2011	59.76	69.98	48.86

स्रोत (source) भारत की जनगणना 1981 ,1991,2001,2011
भारत की जनगणना 2011

तालिका से स्पष्ट है कि पुरुष तथा स्त्री की साक्षरता दर केंद्रीय , राज्य सरकार के प्रयासों तथा सामाजिक जागरूकता के कारण लगातार बढ़ता गया है |

साक्षरता प्रदेश

साक्षरता दर का जमाव मुख्य रूप से नवादा जिला में नवादा, वारसलीगंज ,हिसुआ ,अकबरपुर और नरहर में हैं |

निष्कर्ष

शिक्षा का महत्व हमेशा से रहा है | बिहार में विभाजन होने के बाद यहां के अधिकांश प्राकृतिक संसाधन ,खनिज ,वन इत्यादि नए झारखंड राज्य में चले गए | इस दृष्टिकोण से आज का बिहार बहुत निर्धन हो गया है, परंतु यहां मानव संसाधन की कमी नहीं है | शिक्षा का प्रचार -प्रसार कर बंटवारे के बाद संसाधन की कमी को मानव संसाधन का विकास कर क्षतिपूर्ति किया जा सकता है | वास्तव में मानव

संसाधन ही किसी राज्य / प्रदेश का सही संसाधन होता है | किसी देश / राज्य की सामाजिक विकास, आर्थिक प्रगति तथा राजनैतिक प्रौढ़ता उनके नागरिकों की शिक्षा और प्रशिक्षण पर आधारित होता है | शिक्षा के प्रसार से ग्रामीण तथा नगरीय अर्थव्यवस्था तथा विकास की प्रक्रिया में सुधार की अधिक अपेक्षाएं संचित है |

संदर्भ

1.ओझा , रघुनाथ, जनसंख्या भूगोल (कानपुर, प्रतिमा प्रकाशन) पृष्ठ 235-36
2.पंडा , बी० पी० (1988), जनसंख्या भूगोल (भोपाल,मध्यप्रदेश, हिंदी ग्रंथ अकादमी) पृष्ट 147
3. भारत की जनगणना, 2011, बिहार जनसंख्या के अंतिम आंकड़े पृष्ठ 162
4.चंदना, आर० सी०(2005), ज्याग्राफी ऑफ पोपुलेशन, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स , पृष्ठ संख्या 331
5.लाल,एस०(1989),जनसंख्या भूगोल, (गोरखपुर,वसुंधरा प्रकाशन) पृष्ठ 190
6.मिश्रा डी०- समन्वित ग्रामीण विकास एवं नियोजन- एक भौगोलिक अध्ययन (जनपद जॉनपुर उत्तरप्रदेश) पृष्ठ 72 .